सुष्मिता बारीक
की
कविताएं

वक्त लगता है

बेटियां तुम अपनी एक अलग पहचान बनाओ
भीड़ में चलो कहने के लिए, दुनिया वाले हैं न,
बेटियां आगे बढ़ो, और अपने साहस को
अपना हथियार बनाएं रखो, क्योंकि पीछे खींचने
के लिए दुनियां वाले है न,
जो भी कर आज तय कर, बस कर कहने के लिए
दुनिया वाले हैं न,
बेटियों तुम कुछ बड़ा करके दिखा
ये दुनियां को एहसास दिला की,
बेटियों को रोकना, टोकना बंद करे,
अरे दुनिया वालो ये बेटियां बंदी या द्रोही नही,
बल्कि वो अनमोल है, अनमोल,
बेटियों से ही दुनिया सवरती हैं,
और आज यह दुनिया उन्ही की दुश्मन बन बैठी हैं।

बेटियां

रात बाद सूरज निकलने में भी वक्त लगता हैं,
छोटा से बड़ा बनने में भी वक्त लगता हैं,
झूठ से सच का सफर तय करने के लिए भी वक्त लगता हैं,
खोए हुए अपनो को भूलने में भी वक्त लगता हैं,
बिखरे हुए रिश्ते को सुलझाने के लिए भी वक्त लगता है,
लेकिन अपनी गलती भूलने में वक्त नहीं लगता, और
ये ज़िंदगी हो या गाड़ी जो समय में "गेयर" बदला नही,
तो दोनों की मरम्मत के लिए भी वक्त लगता हैं।